DBT का पूर्वोत्तर कार्यक्रम

[स्रोत: पी.आई.बी](#)

जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) का पूर्वोत्तर कार्यक्रम [भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र (NER)](#) में [जैव प्रौद्योगिकी](#) आधारित परिवर्तन को आगे बढ़ा रहा है।

- **DBT का पूर्वोत्तर कार्यक्रम:** वर्ष 2010-2011 में प्रारंभ किये गए इस कार्यक्रम के बाद से जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) ने **अपने वार्षिक बजट का 10%** पूर्वोत्तर क्षेत्र में जैव प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों के लिये आवंटित किया है, जिसका ध्यान शिक्षा, अनुसंधान और जैव-उद्यमिता को बढ़ाने पर केंद्रित है।
  - अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं को सक्षम बनाया गया, जिससे शोधकर्त्ताओं और छात्रों को लाभ मिला, तथा अनुसंधान और प्रशिक्षण को समर्थन देने के लिये पूर्वोत्तर क्षेत्र में 6 जैव प्रौद्योगिकी केंद्रों की स्थापना की गई।
  - जैव प्रौद्योगिकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) ने **वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशालाएँ (BLiSS)** शुरू कीं। इसके अतिरिक्त, **विजिटिंग रिसर्च प्रोफेसरशिप (VRP) कार्यक्रम** NER संस्थानों में जैव प्रौद्योगिकी में प्रगति को आगे बढ़ाने के लिये शीर्ष वैज्ञानिकों को शामिल करता है।
  - जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT), **DBT-नॉर्थ ईस्ट सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी (DBT-NECAB)** जैसी पहल के माध्यम से भी किसानों का समर्थन करता है।
- **प्रमुख उपलब्धियाँ: असम कृषि विश्वविद्यालय** द्वारा विकसित **"पटकाई" चावल की किस्म,** उन्नत **साँबा महसूरी** (चावल की किस्म) से **ब्लाइट प्रतिरोध** (बैक्टीरियल ब्लाइट रोग से सुरक्षा) को एकीकृत करती है।
  - पशुओं में ब्रुसेलोसिस (जीवाणु संक्रमण) का तेज़ी से पता लगाने के लिये **लेटरल फ्लो एसे (Lateral Flow Assay- LFA)** को मानकीकृत किया गया, जिससे रोग निदान में सुधार हुआ।
  - इसके अतिरिक्त, **सुअर रोग निदान विशेषज्ञ प्रणाली (PDDES)**, एक मोबाइल एप्लिकेशन, को सुअर रोगों के निदान और प्रबंधन में पशु चिकित्सकों और किसानों की सहायता के लिये विकसित किया गया था।

//

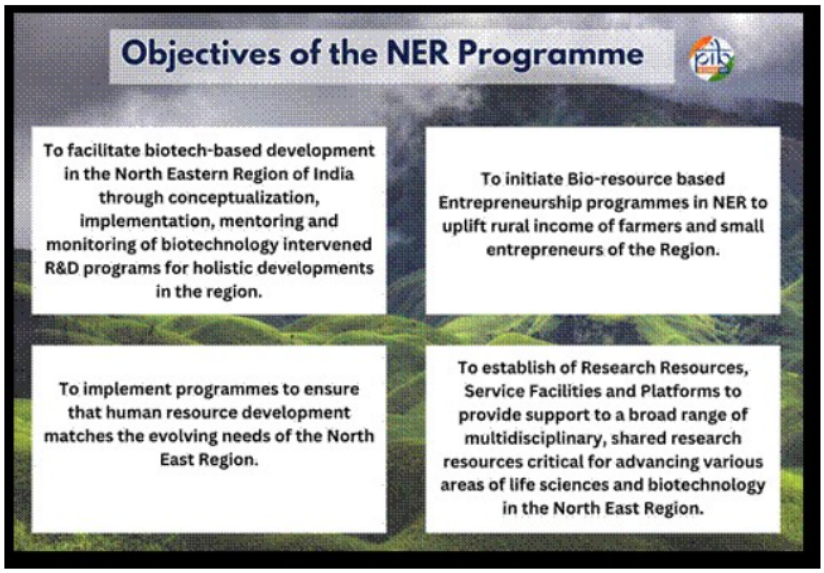

और पढ़ें: [भारत की जैव प्रौद्योगिकी क्रांति](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/dbt-s-north-eastern-programme